भारतीय समाज में परिवार का बदलता स्वरूप

इन्दू
असि० प्रोफे०, समाजशास्त्र विभाग
धर्मेन्द्र सिंह मैमोरियल डिग्री कॉलिज, अटौला, मेरठ
Email:indus5386@gmail.com

सांराश

परिवार एक सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक संस्था है जो प्रत्येक समाज में चाहे वह आदिम समाज हो, या आधुनिक, पूरब हो या पश्चिम, परिवार प्रत्येक समाज में पाया जाता है। प्रारम्भिक अवस्था मे इस प्रकार का परिवार नहीं था जिस प्रकार का स्वरूप आज (आधुनिक समाज) है। सामाजिक इकाई के रूप में परिवार को दोनों लिंगों के अधिकार से जुड़े हो, जो आयु लिंग और सम्बन्धों पर आधारित भूमिकाएँ अदा करते है।

पिछले पचास वर्षो से अधिक समय से भारत में पारिवारिक संस्थाओं एवं उनकी संरचनाओं में भी वृद्धि हुई है। परिवार नामक संस्था विखण्डित हो रही है। भारत में तेजी से बदलाव के साथ ही साथ प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन हो रहा है। प्रायः यह माना जाता है कि चार दीवारी से मकान बनता है और उसमें रहने वाले लोगों के आपसी प्रेम, समर्पण और सदभावना से एक मकान/घर बनता है घर (परिवार) हमे सिर्फ सुरक्षा ही नही प्रदान करता, बल्कि हमे संस्कार और संस्कृति से भी समृद्ध कराता है। आधुनिक समाज की व्यक्तिवादिता और भौतिकवादिता ने एंकाकी परिवार को बढ़ावा दिया।

वर्तमान में महानगरों से लेकर छोटे शहरों, कस्बों व ग्रामीण इलाकों में भी एकल अभिभावकों व एकांकी परिवारों का चलन बढ़ रहा है। ऐसी स्थिति में एक और सामाजिक ढाँचा तो वही दूसरी और बच्चों के सर्वांगीण विकास पर भी प्रश्न चिन्ह लग रहा है यह एक ज्वलन्त समस्या है जो देश और समाज को दीमक की तरह खा रही है। अतः निष्कर्ष यह कि बदलती पारिवारिक संरचना से सामाजिक व सांकृतिक मूल्यों में भी लगातार कमी आ रही है। सहयोग, संरक्षण और स्नेह के भाव खत्म होता जा रहा है जोकि यह हमारी समाज व्यवस्था के लिए खतरा है।

प्रस्तावना

परिवार मानव समाज की पूर्णतः मौलिक एवं सार्वभौमिक इकाई है। हम से प्रत्येक सदस्य किसी न किसी परिवार का सदस्य है। परिवार एकमात्र प्राकृतिक समूह है। प्राणी शास्त्रीय सम्बन्धों के आधार पर बहुत से समूहों का निर्माण होता है, जिनमें परिवार सबसे छोटी इकाई है मानव का सम्पूर्ण जीवन परिवार में व समाज में ही व्यतीत होता है, समाज व्यक्ति को जन्म,

से लेकर मृत्यु तक प्रभावित करता है। परिवार के मूल में स्त्री–पुरूष है, और समाज में परिवार की केन्द्रीय स्थिति होती है। वास्तव में परिवार समाज की आधारभूत इकाई है। परिवार साधारणतया पति–पत्नी और बच्चों समूह को कहते है, जिसमे विवाह और दत्तक प्रथा द्वारा स्वीकृत व्यक्ति भी सम्मिलित है सभी समाजों में बच्चों का जन्म और पालन–पोषण परिवार में होता है बच्चों के संस्कार और समाज के आचार व्यवहार में उन्हें दीक्षित करने का मुख्य कार्य परिवार में होता है। परिवार के द्वारा ही समाज की सांस्कृतिक विरासत एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित करते है।

व्युत्पत्ति की दृष्टि से हिन्दी शब्द परिवार, आंग्ल भाषा के (फैमिली) शब्द का रूपान्तर है यह लैटिन भाशा के 'फैमुलस' शब्द से बना है। जो ऐसे समूह के लिए प्रयुक्त हुआ है, जिसमें माता–पिता, बच्चे नौकर और दास हो। समाजशास्त्रीय दृष्टि से इसका अर्थ पति–पत्नी व बच्चों से होता है।

''परिवार एक गृहस्थ समूह है जिसमें माता–पिता तथा उसकी सन्तानें साथ–साथ रहते है इसके मूल रूप में दम्पत्ति और उसकी सन्तानें रहती है।''

परिवार बच्चों अथवा बिन बच्चों वाले पति–पत्नी अथवा पुरूष या स्त्री में से एक ही के साथ रहने वाले बच्चों की लगभग एक स्थायी समिति है।

औद्योगिक सभ्यता से उत्पन्न जनसंकुल समाजों और नगरों को यदि छोड़ दिया जाये तो व्यक्ति का परिचय मुख्यतः उसके परिवार एवं कुल के आधार पर ही होता है। भारत जैसे देश में एक सम्मिलित परिवार में साधारणतः 10–12 सदस्य होते है किन्तु कुछ परिवारों में सदस्यों की संख्या 50–60 या 100 तक होती है। विवाह, वंशावली, स्वामित्व और शासनाधिकार के विभिन्न रूपों के आधार पर परिवारों के विभिन्न रूप पाये जाते है।

आकार के आधार पर परिवार

1 विस्तृत परिवार
2 संयुक्त परिवार
3 केन्द्रीय परिवार

विस्तृत परिवार –

साधारण तथा पश्चिमी समाजों में एक ऐसा परिवार, जिसमें वृद्ध व्यक्ति उसकी पत्नी उनके पुत्र तथा उसकी पत्नियाँ और बच्चे साथ–साथ रहते है उसे विस्तृत परिवार कहा जाता है। एक ही माता–पिता से सम्बन्धित तीन पीढ़ियों के सदस्य एक विस्तृत परिवार का निर्माण करते है।

संयुक्त परिवार –

संयुक्त परिवार भारतीय समाज की एक प्रमुख विशेषता है जोकि इतिहास में भी वैदिक काल से ही पाया जाता है।

इरावती कार्वे – संयुक्त परिवार उन व्यक्तियों का समूह है, जो सामान्यतः एक ही छत के नीचे रहते है जो एक चूल्हे का भोजन करते है जो सामान्यतः एक ही छत के नीचे रहते है, जो एक चूल्हे का भोजन करते है, सामान्य पूजा–पाठ में भाग लेने के साथ ही साथ किसी न किसी प्रकार का रक्त सम्बन्ध रखते हो। संयुक्त परिवार कहलाता है इरावती कार्वे संयुक्तता में सहनिवासिता को महत्वपूर्ण मानती है।

केन्द्रीय परिवार –

नाभिकीय परिवार या केन्द्रीय परिवार आधुनिक समाज का उदाहरण है हमारें समाज पर नगरीकरण, औद्योगिकरण, लौकिककरण, पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण के प्रभाव का परिणाम केन्द्रीय परिवार है जिन समाजों को औद्योगिकरण के आधार पर जाना जाता है। वहाँ एकांकी परिवार की अधिकता होती है आज के लोकतान्त्रिक विचारों वाले समाज में प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्रता चाहता है जिसके लिए वह एकल परिवार को ही वरीयता देता है।

किसी भी देश में सामाजिक व्यवस्था का ताना–बाना ही जीवन का आधार होता है सामाजिक व्यवस्था का आधार परिवार को माना गया है। लेकिन सह–अस्तित्व की इस अहम कड़ी के टूटने और एकाकी परिवारों के बढ़ते चलन से अब पूरी दुनिया फिक्रमंद है। चिंता लाजिमी भी है और इसी की बुनियाद पर पूरी सामाजिक व्यवस्था की इमारत खड़ी होती है भारतीय संस्कृति में तो पूरे विश्व को ही परिवार मानने का विचार समाहित है। हमारे यहाँ नई पीढ़ी को संस्कार देने की बात हो या एक दूजे को सुख–दुख में साथ देने वाले आधार का मामला में परिवार की भूमिका को अहम बताया जाता है। परिवार में सिर्फ हिस्सा बनना अपनों के साथ एक छत के नीचे रहना भर नहीं है, यह एक सम्पूर्ण जीवनशैली है जो परिवार के हर सदस्य को सुरक्षा प्रदान करती है। परिवार का हिस्सा होना भर ही उसकी सोच का आधार बनता है जो हमें अपनी ही जड़ों से जोड़ती है, ऐसे में पारिवारिक व्यवस्था में आ रहा बिखराव वाकई विचारणीय है। टूटते घर और बिखरते रिश्ते आज एक बड़ी वैश्विक चिंता बन गए है।

परिवार को वैश्विक समुदाय का ही लघु रूप कहा जाता है एक ऐसी इकाई जो स्नेह और सहभागिता की मानवीय समझ को पोशित करने वाला परिवेश तैयार करती है। ऐसे में परिवारों के बिखराव से पूरा वातावरण ही बदल रहा है बच्चों, युवाओं, बुजुर्गों के जीवन में बहुत कुछ परिवर्तित हो रहा है। युवा पीढ़ी एकाकीपन और अवसाद से जूझ रही है इतना ही नहीं, परिवारों में आ रही टूटन से अपराध असुरक्षा और असामाजिकता का वातावरण बन रहा है। मौजूदा समय में बढ़ती कटुता, असामंजस्य, अकेलापन और असुरक्षा के माहौल में पारिवारिक बिखराव से सारी दुनिया चिंतित है भारत ही नहीं, वैश्विक समुदाय मे भी एक साझा समझ और सह–अस्तित्व के भाव की दरकार है।

हाल के बरसों में संयुक्त परिवार की संस्कृति तो खत्म हो ही रही है, एकल परिवारों में भी स्थितियाँ संतोषजनक है। यहाँ तक कि युवाओं की प्राथमिकताओं मे तो घर बसाने की सोच के बजाय खुद के लिए जीने का नया चलन दिख रहा है।

भारत के शीर्ष बीस शहरों के युवाओं पर किए गए की रिपोर्ट के अनुसार शिक्षा का स्तर बढ़ने और शहरीकरण में वृद्धि के चलते युवा पीढ़ी स्वतन्त्र होना चाहती है। इस अध्ययन के अनुसार (छप्पन फीसदी) युवाओं की पहली प्राथमिकता खुद के लिए जीना है। (बावन फीसदी) युवा पढ़ाई पूरी करना, जबकि (बयालिस फीसदी) युवाओं के लिए विश्व भ्रमण पहली प्राथमिकता है। शादी करके घर बसाने का निर्णय लड़के और लड़कियों दोनों के लिए, प्राथमिकताओं की इस फेहरिस्त मे काफी नीचे है। यह हैरानी या सोचनीय बात नहीं है कि हाल के वर्षो में अपने ही सामाजिक–पारिवारिक परिवेश से नई पीढ़ियों में दूरी बढ़ी है यही वजह है कि अब निजी स्वतन्त्रता सामाजिक दायित्वों और पारिवारिक रिश्तों से ज्यादा महत्वूपर्ण हो चली है यह सोच पारिवारिक संस्था को पूरी तरह प्रभावित कर रही है।

परिवार जैसी संस्था बुजुर्गों के लिए सुरक्षा कवच के समान है, तो बच्चों के लिए संस्कार की पाठशाला इतना ही नहीं, सह–अस्तित्व की सोच को पोषित करने वाली पीढ़ियों का साथ सहिष्णुता भी सिखाता है। भावनात्मक बन्धन व्यावहारिक मुश्किले भी आसान करते है ऐसे में परिवारों का टूटना अन्ततः सामाजिक अलगांव के हालात ही पैदा कर रहा है।

एकांकी परिवारों की संख्या जिस तेजी से बढ़ रही है वह ंगंभीर चिन्ता का विशय है। हर उम्र और हर तबके के लोग समाज में उपेक्षा एवंम् एकांकीपन का शिकार हो रहे है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 2020 तक भारत में अवसाद दूसरा सबसे बड़ा रोग होगा। यह कहना गलत नही होगा कि पारिवारिक व्यवस्था का बिखराव अवसाद के शिकार लोगों की संख्या बढ़ा रहा है।

उपभोक्तावादी संस्कृति ने समाज और रिश्तों मे एक असन्तुलन ला दिया है। निष्ठा और प्रतिबद्धता का भाव अब करीबी सम्बन्धों में भी ही दिखता है। आर्थिक विषमताओं के चलते उपजे भेदभाव अब पारिवारिक रिश्तों में भी दिखने लगे है। कभी सिर्फ नाराजगी एवं मनमुटाव तक रहने वाले हालात अब जीवन छीनने तक जा पहुँचते है। हताशा और अकेलापन इस कदर हावी होता जा रहा है कि असंतोष और अधीरता की भावना अपनों को भी हानि पहुँचाने से नहीं चूकती। रिश्तो से रिसता भरोसा और अपनापन ही सामाजिक व्यवस्था के लिए चिंतनीय बना हुआ है।

पारिवारिक व्यवस्था का बिखराव समाज में आपराधिक घटनाओं को भी बढ़ावा दे रहा है। अब न तो अभिभावकों के पास बच्चों को समझने का समय है और न ही बच्चों में बुजुर्गो की सुरक्षा की चिंता करने का भाव, स्नेह और सहयोग की तो सोच ही नदारद है।

यह वाकई चिन्तनीय है कि आपसी संवाद और समझ की कमी से रिश्तों में दरार अब और बड़ी व गहरी होती जा रही है। पारिवारिक विघटन के चलते परिवारजनों में ही हत्या, आत्महत्या और मारपीट के मामले बढ़ रहे हैं।

संयुक्त राष्ट्र की महिला इकाई के अध्ययन के अनुसार (37 फीसदी) भारतीय महिलाएँ घरेलू हिंसा की शिकार होती है। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के आंकड़ों के मुताबिक वर्ष 2016 में बलात्कार के 94.6 प्रतिशत पंजीबद्ध मामलों में बतौर आरोपी पीड़िताओं के दादा, पिता, भाई और बेटे तक शामिल है। ऐसे दुर्भाग्यपूर्ण मामले बताते है कि भारत की जिस पारिवारिक सुदृढ़ता

का मान दुनियाभर में किया जाता है, वह आज किस तरह रक्तरंजित और असुरक्षित हो रही है। बेटों द्वारा सम्पत्ति के विवाद या प्रतिशोध की खातिर माता–पिता की हत्या करने तक ऐसी घटनाएँ सामने आ रही है। जिनमें भाई–भाई का आपसी विवाद हत्या तक जा पहुँचता है। संवेदन शून्य माहौल ने पारिवारिक रिश्तों में ऐसी कड़वाहट ला दी है कि यह हर तब के में पारिवारिक संरचना के विघटन के लिए जिम्मेदार है।

सोशल मीड़िया ने भी पारिवारिक और सामाजिक रिश्तों में सेंध लगाई है। असल दुनिया में संवाद की कमी और आभासी संसार में बीत रहा समय रिश्तों में असंतोष पैदा कर रहा है। इसमे कोई दोराय नही है कि सोशल मीडिया की व्यस्तता की वजह से अपने रिश्तों के प्रति ही नही, पारिवारिक और सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों के सम्मान में भी लगातार कमी आ रही है। सहयोग एवं संरक्षण का भाव समाप्त होता जा रहा है। जोकि हमारी सामाजिक व्यवस्था के लिए खतरे की घंटी है। जरूरी यह है कि आपसी इस बिखराव को गम्भीरता से लिया जाए, आपसी जुड़ाव व समाप्त हो रहे पारिवारिक मूल्यों को पुर्नस्थापित करने का प्रयास किए जाए ताकि हर व्यक्ति का मन और जीवन की बुनियाद बनाने वाली परिवार नामक संस्था पूरे सम्मान व अपने अस्तित्व के साथ कायम रहे। क्योंकि परिवार में ही व्यक्ति की सुरक्षा व संरक्षण सम्भव है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. अग्रवाल, जी०के० *'समाजशास्त्र परिचय'* एस०बी०पी०डी० पब्लिशिंग हाउस 2011 पेज नं० **105–107**
2. आगबर्न एवं निमकॉफ, *'ए हैण्डबुक ऑफ सोशियोलॉजी'* पेज नं० **182**
3. आहुजा, राम, *'भारतीय समाज'* रावत पब्लिशिंग 2000 पेज नं० **92–93**
4. जनसत्ता (समाचार–पत्र) 15 मई 2019 पेज नं० **5**
5. कार्वे, इरावती, '*भारत में नातेदारी व्यवस्था',* एशिया पब्लिशिंग हाउस 1953 पेज नं० **10**
6. मिश्रा, राजन, *'नातेदारी विवाह एवं परिवार'* एस०आर० साइन्टिफिक पब्लिकेशन्स 2006 पेज नं० **95–97**
7. मरडॉक, जे०पी०, *'सोशल स्ट्रक्चर'* पेज नं० **02**
8. शर्मा, जी०एल०, *'सामाजिक मुद्दे',* रावत पब्लिकेशन्स 2015 पेज नं० **3–5**
9. सिंह, बी० अवध, *'समाजशास्त्र के विविध आयाम,'* विश्व–भारती पब्लिकेशन्स (2014) पेज नं० **56–57**